

वर्षा ऋतु में भेड़-बकरी पालन: सावधानियाँ, प्रबंधन एवं रोग नियंत्रण

डॉ. अमित कुमार मीणा

पशु चिकित्सक, राजस्थान सरकार

बारिश का मौसम जहाँ हरियाली और भरपूर चारे का संदेश लेकर आता है, वहीं यह भेड़-बकरी पालकों के लिए कई चुनौतियाँ भी लेकर आता है। इस मौसम में अधिक नमी, कीचड़, आंतरिक एवं बाह्य परजीवियों का प्रकोप तथा संक्रामक रोगों का खतरा बढ़ जाता है। थोड़ी-सी लापरवाही पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन और प्रजनन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। यदि वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन किया जाए तो इन समस्याओं से काफी हद तक बचा जा सकता है।

बारिश के मौसम में भेड़-बकरियों का पालन-पोषण एवं रखरखाव

भेड़ और बकरियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण धुरी हैं। कम लागत में अधिक लाभ देने वाले इन पशुओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा वर्षा ऋतु में विशेष रूप से आवश्यक होती है। इस मौसम में निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

1. स्वच्छ एवं सूखा आवास

बरसात के मौसम में भेड़-बकरियों के अच्छे स्वास्थ्य की आधारशिला स्वच्छ, सूखा एवं हवादार आवास है। पशुशाला का निर्माण ऐसे ऊँचे स्थान पर होना चाहिए जहाँ वर्षा का पानी एकत्र न हो तथा जल निकासी की समुचित व्यवस्था हो। फर्श साफ, सूखा और मजबूत होना चाहिए, ताकि नमी एवं कीचड़ के कारण रोगजनक जीवाणुओं, विषाणुओं तथा फफूंद का विकास न हो। पशुशाला में पर्याप्त प्राकृतिक प्रकाश एवं शुद्ध वायु का आवागमन बना रहे, वहीं वर्षा के पानी, ठंडी हवाओं तथा तेज़ नमी से पशुओं की सुरक्षा भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। फर्श पर बिछाए गए बिछावन (बेडिंग) को नियमित रूप से बदलकर सूखा एवं स्वच्छ रखा जाए, क्योंकि गीला बिछावन संक्रमण, खुर रोग तथा श्वसन संबंधी समस्याओं का प्रमुख कारण बन सकता है।

2. संतुलित एवं सुरक्षित आहार

वर्षा ऋतु में हरे चारे की उपलब्धता बढ़ जाती है, जिससे भेड़-बकरियों के पोषण में सुधार का अच्छा अवसर मिलता है। हालांकि, इस मौसम में गीला, सड़ा-गला अथवा फफूंदयुक्त चारा खिलाने से बचना चाहिए, क्योंकि ऐसा चारा पाचन संबंधी विकारों, विषाक्तता तथा अन्य गंभीर रोगों का कारण बन सकता है। पशुओं को उनकी आयु, शारीरिक अवस्था एवं उत्पादन क्षमता के अनुसार संतुलित आहार उपलब्ध कराना चाहिए। आहार में खनिज मिश्रण (Mineral Mixture) एवं साधारण नमक का नियमित समावेश आवश्यक है, जिससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता, वृद्धि एवं प्रजनन क्षमता बेहतर बनी रहती

है। इसके साथ ही, पशुओं को हर समय स्वच्छ, ताजा एवं दूषण रहित पेयजल उपलब्ध कराना चाहिए, क्योंकि दूषित पानी अनेक जीवाणुजनित एवं परजीवी रोगों के प्रसार का प्रमुख माध्यम बन सकता है।

3. चराई का उचित प्रबंधन

वर्षा ऋतु में चराई प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। भारी वर्षा के दौरान या उसके तुरंत बाद पशुओं को चराई के लिए नहीं भेजना चाहिए, क्योंकि गीली एवं फिसलन भरी भूमि दुर्घटनाओं के साथ-साथ विभिन्न रोगों का जोखिम भी बढ़ा देती है। चराई के लिए प्रातःकाल ओस सूखने के बाद का समय अधिक उपयुक्त माना जाता है। पशुओं को जलभराव, दलदली एवं अत्यधिक नमी वाले क्षेत्रों में चराने से बचाना चाहिए, क्योंकि ऐसे स्थान आंतरिक परजीवियों, विशेषकर लीवर फ्लूक (Liver Fluke), तथा अन्य कृमियों के संक्रमण के प्रमुख स्रोत होते हैं। साथ ही, चराई के दौरान यह भी सुनिश्चित करें कि पशु विषैले पौधों, सड़े-गले चारे या रासायनिक पदार्थों से दूषित घास का सेवन न करें। उचित चराई प्रबंधन अपनाकर परजीवी संक्रमण एवं अन्य मौसमी रोगों के जोखिम को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

4. रोगों की रोकथाम

वर्षा ऋतु में वातावरण में बढ़ी हुई नमी एवं परजीवियों की सक्रियता के कारण भेड़-बकरियों में संक्रामक एवं परजीवी जनित रोगों का जोखिम काफी बढ़ जाता है। ऐसे में नियमित स्वास्थ्य प्रबंधन अपनाना अत्यंत आवश्यक है। पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार समय-समय पर कृमिनाशन (Deworming) कराना चाहिए, जिससे आंतरिक परजीवियों के संक्रमण को नियंत्रित किया जा सके। इसी प्रकार, निर्धारित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करते हुए पीपीआर (PPR), एंटरोटोक्सिमिया (ET), शीप पॉक्स/गोट पॉक्स तथा फुट एंड माउथ डिजीज (FMD) जैसे प्रमुख रोगों के विरुद्ध समय पर टीकाकरण कराना चाहिए। यदि किसी पशु में बुखार, भूख कम लगना, दस्त, खाँसी या अन्य असामान्य लक्षण दिखाई दें, तो उसे तुरंत स्वस्थ पशुओं से अलग कर पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। समय पर पहचान, उपचार एवं जैव-सुरक्षा (Biosecurity) के उपाय अपनाकर रोगों के प्रसार को प्रभावी ढंग से रोका जा सकता है।

5. खुरों की देखभाल

वर्षा ऋतु में लगातार नमी और कीचड़ के संपर्क में रहने से भेड़-बकरियों के खुर मुलायम हो जाते हैं, जिससे खुर सड़न (Foot Rot) तथा अन्य खुर संबंधी संक्रमण होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए खुरों की नियमित सफाई, समय-समय पर कटाई (Trimming) तथा उनमें फँसी मिट्टी और गंदगी को हटाना आवश्यक है। पशुओं को लंबे समय तक गीली एवं दलदली भूमि पर खड़ा या चरने नहीं देना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार जिंक सल्फेट या कॉपर सल्फेट

युक्त फुटबाथ का उपयोग किया जा सकता है, जो संक्रमण की रोकथाम में सहायक होता है। यदि किसी पशु में लंगड़ापन, खुरों से दुर्गंध, सूजन अथवा घाव जैसे लक्षण दिखाई दें, तो तुरंत उपचार कराना चाहिए, जिससे संक्रमण अन्य पशुओं में फैलने से रोका जा सके।

6. बाह्य परजीवियों का नियंत्रण

वर्षा ऋतु में वातावरण में बढ़ी हुई नमी और अनुकूल तापमान के कारण जूँ, किलनी (Ticks) तथा माइट्स (Mites) जैसे बाह्य परजीवियों का प्रकोप तेजी से बढ़ जाता है। ये परजीवी पशुओं में त्वचा रोग, खुजली, रक्ताल्पता (एनीमिया), वजन में कमी तथा उत्पादन क्षमता में गिरावट का कारण बनते हैं। इनके प्रभावी नियंत्रण के लिए पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार समय-समय पर उपयुक्त एकारिसाइड (Acaricide) दवाओं, स्प्रे अथवा डिप का उपयोग करना चाहिए। साथ ही, पशुशाला की नियमित सफाई, कीटाणुशोधन एवं आसपास के वातावरण को सूखा और स्वच्छ बनाए रखना आवश्यक है। संक्रमित पशुओं को अलग रखकर उनका शीघ्र उपचार करने से संक्रमण को अन्य पशुओं में फैलने से रोका जा सकता है तथा पूरे झुंड का स्वास्थ्य सुरक्षित रखा जा सकता है।

7. गर्भित एवं नवजात पशुओं की विशेष देखभाल

वर्षा ऋतु में गर्भित मादाओं तथा नवजात मेमनों एवं बच्चों को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है, क्योंकि इस समय नमी, ठंड एवं संक्रमण का खतरा अधिक रहता है। गर्भित पशुओं को संतुलित एवं पौष्टिक आहार, स्वच्छ पेयजल तथा सूखा एवं आरामदायक आवास उपलब्ध कराना चाहिए, जिससे उनका स्वास्थ्य एवं गर्भस्थ शिशु का समुचित विकास सुनिश्चित हो सके। प्रसव के बाद नवजात बच्चों को तुरंत साफ एवं सूखे स्थान पर रखकर उनके शरीर को अच्छी तरह सुखाना चाहिए तथा जन्म के पहले 1-2 घंटे के भीतर माँ का पहला दूध (कोलोस्ट्रम) अवश्य पिलाना चाहिए। कोलोस्ट्रम में प्रचुर मात्रा में प्रतिरक्षी (Antibodies) एवं आवश्यक पोषक तत्व होते हैं, जो नवजात की प्रारंभिक रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने, संक्रमण से सुरक्षा प्रदान करने तथा स्वस्थ वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नवजात एवं उनकी माताओं की नियमित निगरानी तथा स्वच्छता बनाए रखने से वर्षा ऋतु में होने वाली अनेक स्वास्थ्य समस्याओं से प्रभावी रूप से बचाव किया जा सकता है।

निष्कर्ष

बारिश का मौसम यदि सही प्रबंधन के साथ बिताया जाए तो यह भेड़-बकरी पालन के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हो सकता है। स्वच्छ एवं सूखा आवास, संतुलित पोषण, स्वच्छ पेयजल, नियमित कृमिनाशन, समय पर टीकाकरण, खुरों की देखभाल तथा स्वच्छ चराई प्रबंधन अपनाकर अधिकांश रोगों की रोकथाम की जा सकती है। स्वस्थ पशु ही अधिक उत्पादन देते हैं, बेहतर प्रजनन करते हैं और पशुपालकों की आय में वृद्धि का आधार बनते हैं।